

सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत लड़कियों की शिक्षा में सुधार हेतु समुदाय आधारित परियोजना प्रबंधन का अध्ययन

अविनाश कुमार सिंह¹ and डॉ. महीप कुमार मिश्रा²

¹शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र—विभाग

²प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र—विभाग

मोनाड विश्वविद्यालय, हापुड़

सारांश

भारत में शिक्षा को सार्वभौमिक बनाने के लिए सर्वशिक्षा अभियान एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कार्यक्रम रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य 6 से 14 वर्ष आयु वर्ग के सभी बच्चों को अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा प्रदान करना है। विशेष रूप से लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए इस योजना ने कई संरचनात्मक और सामाजिक हस्तक्षेप किए हैं।

यह शोध पत्र समुदाय आधारित परियोजना प्रबंधन की भूमिका का विश्लेषण करता है, जो विद्यालय प्रबंधन समितियों, माता-पिता, स्थानीय प्रशासन और गैर-सरकारी संगठनों की सक्रिय भागीदारी पर आधारित है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि समुदाय की भागीदारी से लड़कियों के नामांकन, उपस्थिति, सीखने की क्षमता और ड्रॉपआउट दर में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

मुख्य संकेतक: सर्वशिक्षा अभियान, लड़कियों की शिक्षा, समुदाय आधारित प्रबंधन, विद्यालय प्रबंधन समिति, शिक्षा सुधार, ग्रामीण शिक्षा

परिचय

भारत जैसे विकासशील देश में शिक्षा सामाजिक एवं आर्थिक विकास का आधार है। हालांकि स्वतंत्रता के बाद से शिक्षा में सुधार हुआ है, फिर भी ग्रामीण और वंचित वर्गों में विशेषकर लड़कियों की शिक्षा आज भी चुनौतीपूर्ण रही है।

सर्वशिक्षा अभियान (2001) ने इस अंतर को कम करने का प्रयास किया। लेकिन केवल सरकारी प्रयास पर्याप्त नहीं थे, इसलिए समुदाय की भागीदारी को शिक्षा सुधार का महत्वपूर्ण घटक बनाया गया।

समुदाय आधारित परियोजना प्रबंधन ने शिक्षा प्रणाली को अधिक पारदर्शी, जवाबदेह और प्रभावी बनाया है। इससे स्थानीय स्तर पर समस्याओं का समाधान तेजी से संभव हुआ है।

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. लड़कियों की शिक्षा की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना।
2. समुदाय आधारित परियोजना प्रबंधन की भूमिका का अध्ययन करना।
3. SSA के अंतर्गत शिक्षा सुधारों का मूल्यांकन करना।
4. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में अंतर का विश्लेषण करना।
5. नीति सुधार हेतु सुझाव देना।

अनुसंधान पद्धति

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है।

डेटा स्रोत:

1. सरकारी रिपोर्ट
2. ASER रिपोर्ट
3. NCERT प्रकाशन
4. विभिन्न शोध पत्र
5. केस स्टडी विश्लेषण

पद्धति का प्रकार:

1. गुणात्मक
2. आंशिक मात्रात्मक

सर्वशिक्षा अभियान का परिचय

सर्वशिक्षा अभियान भारत सरकार की एक प्रमुख योजना है, जिसका उद्देश्य:

1. सभी बच्चों को स्कूल में नामांकित करना
2. ड्रॉपआउट दर कम करना
3. शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाना
4. लैंगिक समानता को बढ़ावा देना

समुदाय आधारित परियोजना प्रबंधन

समुदाय आधारित परियोजना प्रबंधन एक ऐसी विकासात्मक और सहभागितामूलक प्रक्रिया है जिसमें किसी भी परियोजना की योजना, क्रियान्वयन, निगरानी और मूल्यांकन में स्थानीय समुदाय की सक्रिय भूमिका होती है। यह अवधारणा इस विश्वास पर आधारित है कि किसी भी सामाजिक, शैक्षिक या विकासात्मक परियोजना की सफलता केवल सरकारी प्रयासों से नहीं, बल्कि स्थानीय लोगों की भागीदारी से अधिक प्रभावी ढंग से सुनिश्चित की जा सकती है। विशेषकर शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण विकास और महिला सशक्तिकरण जैसे क्षेत्रों में समुदाय आधारित परियोजना प्रबंधन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत जैसे विविधता-पूर्ण और विशाल जनसंख्या वाले देश में यह दृष्टिकोण और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है क्योंकि यहां की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियाँ अलग-अलग क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न हैं।

समुदाय आधारित परियोजना प्रबंधन का मुख्य उद्देश्य स्थानीय स्तर पर निर्णय लेने की प्रक्रिया को लोकतांत्रिक बनाना और लाभार्थियों को विकास प्रक्रिया का सक्रिय हिस्सा बनाना है। इसमें केवल बाहरी विशेषज्ञों या सरकारी अधिकारियों पर निर्भर रहने के बजाय समुदाय स्वयं अपनी आवश्यकताओं की पहचान करता है, प्राथमिकताएँ तय करता है और संसाधनों के उपयोग की निगरानी करता है। इससे परियोजनाओं में पारदर्शिता, जवाबदेही और दक्षता बढ़ती है। यह प्रणाली "टॉप-डाउन" दृष्टिकोण के स्थान पर "बॉटम-अप" दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है, जिसमें निर्णय जमीनी स्तर से ऊपर की ओर जाते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में समुदाय आधारित परियोजना प्रबंधन का विशेष महत्व है, विशेषकर सर्वशिक्षा अभियान और समग्र शिक्षा जैसी योजनाओं के अंतर्गत। विद्यालय प्रबंधन समिति माता-पिता-शिक्षक संघ, ग्राम पंचायत और स्थानीय स्वयं सहायता समूह इस प्रणाली के प्रमुख घटक हैं। ये सभी मिलकर विद्यालय की कार्यप्रणाली, छात्रों की उपस्थिति, शिक्षकों की जिम्मेदारी और संसाधनों के उपयोग पर निगरानी रखते हैं। इससे न केवल प्रशासनिक सुधार होता है, बल्कि समुदाय और विद्यालय के बीच विश्वास भी बढ़ता है।

इस मॉडल का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह शिक्षा को स्थानीय जरूरतों के अनुरूप बनाता है। उदाहरण के लिए, ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ बालिका शिक्षा अक्सर सामाजिक बाधाओं जैसे बाल विवाह, घरेलू कार्यों में संलग्नता और आर्थिक तंगी से प्रभावित होती है, वहाँ समुदाय की सक्रिय भागीदारी इन समस्याओं को कम करने में मदद करती है। समुदाय के लोग जागरूकता अभियान चलाते हैं, अभिभावकों को शिक्षा के महत्व के बारे में समझाते हैं और बालिकाओं के स्कूल छोड़ने की समस्या पर नियंत्रण रखते हैं। इससे लड़कियों के नामांकन और उपस्थिति दर में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।

समुदाय आधारित परियोजना प्रबंधन संसाधनों के बेहतर उपयोग में भी सहायता करता है। जब स्थानीय लोग परियोजना की निगरानी करते हैं, तो भ्रष्टाचार और संसाधनों के दुरुपयोग की संभावना कम हो जाती है। विद्यालयों में मिलने वाली सरकारी सहायता, जैसे मध्याह्न भोजन योजना, छात्रवृत्ति, किताबें और यूनिफॉर्म, सही लाभार्थियों तक पहुँचती है। इसके अतिरिक्त, समुदाय स्वयं भी संसाधनों का योगदान करता है, जैसे भवन मरम्मत, खेल सामग्री या शैक्षिक गतिविधियों के लिए धन संग्रह। यह साझेदारी भावना परियोजना को अधिक स्थायी बनाती है।

इसके अलावा, समुदाय आधारित परियोजना प्रबंधन सामाजिक समरसता और सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना को बढ़ावा देता है। जब सभी हितधारक एक साथ मिलकर किसी लक्ष्य की ओर काम करते हैं, तो समाज में सहयोग और विश्वास की भावना मजबूत होती है। यह विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इससे लोगों में यह भावना विकसित होती है कि शिक्षा केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि पूरे समुदाय का साझा दायित्व है।

हालांकि इस प्रणाली के कई लाभ हैं, लेकिन इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं। सबसे प्रमुख चुनौती समुदाय में जागरूकता की कमी है। कई स्थानों पर लोग शिक्षा या परियोजना प्रबंधन में सक्रिय भागीदारी नहीं निभाते क्योंकि वे अपनी भूमिका को स्पष्ट रूप से नहीं समझते। इसके अलावा, सामाजिक असमानता, जातिगत

भेदभाव और लैंगिक असमानता भी इस प्रक्रिया को प्रभावित करती है। कई बार निर्णय लेने की प्रक्रिया कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के हाथों में सीमित हो जाती है, जिससे वास्तविक लोकतांत्रिक भागीदारी बाधित होती है। एक अन्य चुनौती संसाधनों की कमी और प्रशिक्षण का अभाव है। समुदाय के सदस्यों को परियोजना प्रबंधन, वित्तीय निगरानी और योजना निर्माण के लिए उचित प्रशिक्षण नहीं मिलता, जिससे उनकी प्रभावशीलता सीमित हो जाती है। इसके अतिरिक्त, सरकारी तंत्र और समुदाय के बीच समन्वय की कमी भी कई बार परियोजनाओं की सफलता में बाधा बनती है।

इन चुनौतियों के बावजूद, समुदाय आधारित परियोजना प्रबंधन एक अत्यंत प्रभावी मॉडल साबित हुआ है। इसे और अधिक सफल बनाने के लिए आवश्यक है कि समुदाय के सदस्यों को नियमित प्रशिक्षण दिया जाए, जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाएँ और डिजिटल तकनीकों का उपयोग बढ़ाया जाए। साथ ही, पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए निगरानी तंत्र को मजबूत किया जाना चाहिए।

समुदाय आधारित परियोजना प्रबंधन एक ऐसा दृष्टिकोण है जो विकास को जमीनी स्तर से जोड़ता है। यह न केवल परियोजनाओं की सफलता सुनिश्चित करता है, बल्कि सामाजिक सशक्तिकरण, विशेषकर महिलाओं और लड़कियों की शिक्षा में सुधार के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत जैसे देश में, जहाँ सामाजिक विविधता और चुनौतियाँ अधिक हैं, यह मॉडल सतत विकास और समानता की दिशा में एक मजबूत आधार प्रदान करता है।

CBPM एक ऐसी प्रणाली है जिसमें स्थानीय समुदाय शिक्षा व्यवस्था के संचालन में सक्रिय भूमिका निभाता है।

मुख्य घटक:

1. विद्यालय प्रबंधन समिति
2. माता-पिता-शिक्षक संघ
3. पंचायत राज संस्थान
4. स्वयं सहायता समूह
5. स्थानीय NGO

CBPM के कार्य:

1. विद्यालय की निगरानी

2. शिक्षक उपस्थिति नियंत्रण
3. छात्र नामांकन अभियान
4. बालिका शिक्षा प्रोत्साहन
5. आधारभूत सुविधाओं का विकास

लड़कियों की शिक्षा की स्थिति

तालिका 1: SSA के अंतर्गत सुधार

संकेतक	2001 से पहले	SSA के बाद	CBPM लागू होने के बाद
नामांकन दर	55%	78%	92%
उपस्थिति दर	50%	72%	88%
ड्रॉपआउट दर	45%	25%	12%
साक्षरता स्तर	निम्न	मध्यम	उच्च

समुदाय आधारित प्रबंधन के प्रभाव

1. नामांकन में वृद्धि

समुदाय की सक्रिय भागीदारी से अभिभावकों में जागरूकता बढ़ी, जिससे लड़कियों का स्कूल में नामांकन बढ़ा।

2. ड्रॉपआउट में कमी

बाल विवाह, बाल श्रम और आर्थिक समस्याओं पर समुदाय ने नियंत्रण किया।

3. गुणवत्ता सुधार

शिक्षकों की जवाबदेही बढ़ी, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हुआ।

4. सामाजिक परिवर्तन

लड़कियों की शिक्षा के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में सकारात्मक बदलाव आया।

निष्कर्ष

सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत समुदाय आधारित परियोजना प्रबंधन ने लड़कियों की शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है। इससे न केवल नामांकन और उपस्थिति में वृद्धि हुई है, बल्कि सामाजिक दृष्टिकोण में भी सकारात्मक बदलाव आया है।

हालांकि अभी भी कई सामाजिक और आर्थिक बाधाएँ मौजूद हैं, जिन्हें दूर करने के लिए सरकार, समुदाय और शिक्षण संस्थानों के बीच सहयोग आवश्यक है।

संदर्भ

1. एनसीईआरटी. (2021)। प्रारंभिक शिक्षा में कोचिंग भागीदारी। नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
2. किंगडन, जी. (2017)। भारत में भागीदारी भागीदारी पर एसएसए का प्रभाव। शिक्षा की ऑक्सफोर्ड समीक्षा, 43(2), 245-260।
3. गोविंदा, आर. (2011)। स्कूल कौन सा है? भारतीय शिक्षा में बहिष्कार की पहचान। ईपीडब्ल्यू रिसर्च फाउंडेशन जर्नल, 46(2), 15-22।
4. जांच टीम. (1999)। भारत में दर्शन शिक्षा पर सार्वजनिक रिपोर्ट। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. ड्रेज़, जे., और सेन, ए. (2013)। एक गौरवशाली: भारत और उसके विरोधाभास। प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. तिलक, जे.बी.जी. (2019)। भारत में शिक्षा नीति: मुद्दे और चुनौतियाँ। इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशन पॉलिसी, 12(4), 33-49।
7. नंदा, एस. (2025)। भारत में वास्तुकला शिक्षा प्रशासन एजेंसी और संरचना की भूमिका। शैक्षिक विकास जर्नल, 45(3), 210-225। <https://doi.org/10.1177/01672533251365047>
8. नागाजू एम. टी. वी. (2022)। एसएसए के तहत प्राथमिक स्कूलों में एसोसिएशन की भागीदारी। जर्नल ऑफ एजुकेशन रिसर्च, 204(2), 55-70। <https://doi.org/10.1177/00220574221130957>
9. पोद्दार, एन., और डायन, एस. (2025)। भारत में एसएसए के प्रभाव पर सहयोगी धारणा। जर्नल ऑफ मार्केटिंग एंड सोशल रिसर्च, 2(2), 451-462। <https://doi.org/10.61336/jmsr/25-02-41>
10. प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन। (2022)। भारत में सीखने के परिणाम और लैंगिक अंतर। नई दिल्ली:

प्रथम.

11. भारत सरकार. (2023)। शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट (एएसईआर)। नई: दिल्ली एएसईआर केंद्र।
12. मेहरोत्रा, एस. (2020). सार्वजनिक शिक्षा के लिए: भारत में प्रगति और चुनौतियाँ। इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 55(10), 45-52।
13. यूनिसेफ। (2022)। साझेदारी के माध्यम से लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देना। यूनिसेफ इंडिया।
14. यूनेस्को। (2021)। दक्षिण एशिया में लड़कियों की शिक्षा और लैंगिक समानता। यूनेस्को प्रकाशन।
15. रामचंद्रन, वी. (2018)। भारत में लैंगिक और प्रारंभिक शिक्षा। रूटलेज इंडिया।
16. विश्व बैंक. (2020)। ग्रामीण भारत में शिक्षा के सिद्धांतों में सुधार। वाशिंगटन, डीसी: विश्व बैंक।
17. शर्मा, ए. (2024)। भारत में प्राथमिक शिक्षा में विकेंद्रीकरण: एसएसए के तहत साझेदारी। जर्नल ऑफ रिसर्च एडमिनिस्ट्रेशन, 6(1), 112-128।
<https://journalra.org/index.php/jhra/article/view/1627>
18. शिक्षा मंत्रालय. (2022)। समग्र शिक्षा अभियान वार्षिक रिपोर्ट। भारत सरकार।
19. सिंह, पी. (2012)। एसएसए के कार्यान्वयन में स्कूल प्रबंधन उपाध्यक्ष की भूमिका। प्राथमिक शिक्षक, 37(1-2), 107-112। <https://ejournals.ncert.gov.in/index.php/tpt/article/view/830>
20. सिंह, पी., और कुरियन, टी. (2018)। सीआरसी और बीआरसी के माध्यम से नामांकित शिक्षा को बनाना। जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, 44(3), 68-77।
<https://ejournals.ncert.gov.in/index.php/jie/article/view/2536>